27.2.19

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक का नाटकीय महत्त्व

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का चतुर्थ अंक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। चतुर्थ अंक के महत्त्व का निरूपण करते हुए एक सूक्ष्मदर्शी विद्वान् ने लिखा है —

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः तत्र श्लोकचतुष्टयम्॥

अर्थात् काव्य में दृश्य काव्य अत्यन्त रम्य होता है और दृश्य काव्यों में अभिज्ञानशाकुन्तल सर्वाधिक रमणीय है। उसमें भी चतुर्थ अंक उत्कृष्ट है और चतुर्थ अंक में भी चार श्लोक रमणीयतम हैं।

कण्व का शकुन्तला को उपदेश और शकुन्तला की विदाई का करुण भाव-पूर्ण मार्मिक प्रसंग चतुर्थ अंक की महत्ता को बढ़ाने वाले हैं। संस्कृत समीक्षा-साहित्य में चतुर्थ अंक के सम्बन्ध में यह उक्ति प्रसिद्ध है —

कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः यत्र याति शकुन्तला॥

PAGE NO.:
DATE: / /

यह सारा चतुर्थ अंक 'यास्यत्यद्य शकुन्तलेति', 'शुश्रूषस्व गुरून्कुरु', 'अस्मान् साधु' और 'पातुं न प्रथमं' इन चार पंखुड़ियों का खिला हुआ, मुस्कराता हुआ अनाघ्रात पुष्प-सा है।

चतुर्थ अंक में मौलिकता का समावेश — कालिदास ने शाकुन्तलम् के चतुर्थ अंक में विष्कम्भक की योजना करके मूल कथानक को नवीन मोड़ दिया है। यह विष्कम्भक भावी विपत्ति की प्रथम सूचना है। कालिदास ने दुर्वासा के शाप जैसी महत्त्वपूर्ण घटना को विष्कम्भक में उल्लिखित कर अपने अपूर्व नाट्य-कौशल का परिचय दिया है। शकुन्तला के प्रवास का दृश्य अपने कवित्वमय वर्णन में, कन्या के गमन पर पितृ-हृदय की कोमल भावनाओं के चित्रण में तथा सामाजिक और नैतिक आदर्शों के निरूपण में अनुपम है। कण्व की पुत्री के वियोग से जन्य व्यग्रता, अनुसूया और प्रियंवदा की आनन्द में परिणत चिन्ता, कण्व का राजा के नाम सन्देश और भावी गृहलक्ष्मी को उपदेश तथा आश्रम की नीरवता में विविध भाव और घटनाएँ - ये सब ऐसी मार्मिकता और प्रगाढ़ सुकुमारता से चित्रित हुए हैं कि ऐसा प्रतीत होता है कि यह अंक मानो शब्द-निर्मित मानव-हृदय ही हो।

मानव समाज की समस्त स्वाभाविक वृत्तियों का निदर्शन — कालिदास ने चतुर्थ अङ्क में मानव - ~~स्वभाव~~ स्वभाव की समस्त स्वाभाविक

प्रवृत्तियों का निदर्शन किया है। महर्षि कण्व अपनी पालित कन्या की विदाई के प्रसंग से दुःखी हैं, यह सोचा नहीं जाता कि शकुन्तला आज चली जाएगी। सोचते ही कलेजा जैसे मुँह को आने लगता है, दिल बैठ जाता है निष्पंद हो चला है। वस्तुतः सारी इन्द्रियाँ ~~इसके~~ जड़ हो गई हैं। आँसुओं के बलात निरोध से गला भी रुँध गया है, गले से शब्द नहीं निकलते, साथ ही विकलता से दृष्टि-पथ धूमिल हो गया है —

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति ——————— दुःखितः ॥

शकुन्तला का पितृस्नेह और कण्व का वात्सल्य भाव दोनों की गंगा जमुनी धाराओं का संगम होकर वातावरण करुण बन गया है। कण्व भी एक सद्‌गृहस्थ की भाँति कन्या के भार से मुक्त होते हैं —

अर्थो हि कन्या ——————— प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा ॥

कन्या दूसरे का धन है। इसलिए उसे पति के पास भेजकर मेरा मन ऐसा स्वस्थ हुआ है जैसे किसी की धरोहर उसके स्वामी को लौटा दी हो।

पितृस्नेह और वात्सल्य का संगम — ~~कण्व~~

चतुर्थ अंक में कालिदास ने पितृस्नेह (शकुन्तला का कण्व के प्रति) और वात्सल्य (कण्व का शकुन्तला के प्रति) दोनों की गंगा जमुनी धाराओं का संगम बनाकर वातावरण अत्यन्त करुण बना दिया है।

शकुन्तला ~~करुण~~ ~~स~~ कण्व से विह्वल होकर कहती है —

तात कदा न खलु भूयस्तपोवनं प्रेक्षिष्ये । वह कहती है कि पिता मैं तुम्हारी गोद से अलग होकर मलय पर्वत से उखाड़ हुए चन्दन के पौधे के समान परदेश में पहुँच कर कैसे जी पाऊँगी । गौतमी के पुनः याद दिलाने पर कि विदाई का समय हो रहा है शकुन्तला अन्तिम बार कण्व के गले लगाकर कहती है – 'तपस्या से आपका शरीर बहुत कमजोर हो गया है । आप मेरे लिए बहुत अधिक दुःख न कीजिएगा ।' यह सुनते ही ऋषि की करुणा सहस्र आँसुओं में फूट पड़ती है । वह फफक-फफक कर रोते हुए कहते हैं - बेटी असम्भव है । पूजन के लिए कुटी के द्वार पर तेरे द्वारा उगाए गए, पाले गए इन नीवार पुष्पों को देखते हुए भला मेरा शोक कैसे कम होगा ।' इस प्रकार पितृ स्नेह और वात्सल्य की गंगा जमुनी धारा का संगम चतुर्थ अंक में हुआ है ।

चतुर्थ अंक पर कालिदास की करुणा छायी हुई है । वही इस अंक की आत्मा है, इसकी जीवनी शक्ति है ।

भारतीय संस्कृति का उज्ज्वल चित्र — कालिदास के चतुर्थ अंक में भारतीय संस्कृति का उज्ज्वल आदर्श कण्व द्वारा शकुन्तला को दिए गए उपदेश में प्रस्तुत किया है । चतुर्थ अंक का निम्नलिखित श्लोक विदा होती हुई पुत्री के प्रति पिता का भारतीय संस्कृति के अनुरूप अत्यंत उत्तम उपदेश है —

'शुश्रूषस्व गुरून्कुरु ______________ 1"

यह श्लोक शकुन्तला के चतुर्थ अंक का सर्वोत्तम श्लोक माना जाता है। पति गृह को जाती हुई पुत्री को पिता जो कुछ सुन्दर उपदेश दे सकता है उसका अत्यन्त सुन्दर वर्णन कालिदास ने इस श्लोक में प्रस्तुत किया है।

कला और जीवन का समन्वय — कालिदास ने चतुर्थ अंक में कला और जीवन का अद्‌भुत समन्वय किया है। कालिदास जीवन शिल्पी है। उन्होंने जीवन की सूक्ष्मातिसूक्ष्म मान्यताओं और धारणाओं, मन के समस्त संवेगों और भूमिकाओं तथा समाज और संस्कृति की सम्पूर्ण विधाओं को माधुर्यव्यञ्जक वर्णों एवं ललितात्मिका शैली द्वारा चतुर्थ अंक में कलात्मक ढंग से चित्रित किया है, जो अपनी मार्मिकता के कारण प्रभावशाली बन गयी है।

ध्वनि और व्यञ्जना का प्राधान्य — चतुर्थ अंक में कलापक्ष की विशेषता इसमें ध्वनि और व्यञ्जना का प्राधान्य है। कण्व का दुष्यन्त को सन्देश और शकुन्तला को उपदेश एक-एक श्लोक में सन्निहित हैं। 'अस्मान् साधु विचिन्त्य' और 'शुश्रूषस्व गुरून' श्लोकों में भाषा का संक्षेप एवं ध्वन्यात्मकता सराहनीय है। वर्णन की स्वाभाविक शैली एवं कथन-उपकथन की पात्रानुकूल भाषा, घटनाओं का संगठन, रसों का परिपाक आदि कालिदास की प्रशस्त रचना शैली की विशेषताएँ

है। शैली की ध्वन्यात्मक गति अनूठे ढंग से रहस्यों की व्यंजना करती है। यह व्यंजना मनोज्ञ है, सहृदय-संवेद्य है तथा उसमें अनन्त अगाध करुणा का सागर लहरा रहा है। चतुर्थ अंक में कालिदास की कविता की मनोज्ञता से सहृदय अभिभूत होकर कह उठता है कि 'कालिदास की कविता शकुन्तला की भाँति सुकुमार और मनोज्ञ है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक का सौन्दर्य वर्णनातीत है। उसका कोई स्थल, कोई पंक्ति और कोई द्वन्द्व ऐसा नहीं है जिसमें कोमलकान्त पदावली सहज प्रवाहमान भाषा एवं भावों की मनोरमता बिखरी हुई दृष्टिगोचर न होती हो। उसमें केवल काव्यात्मक सौन्दर्य ही नहीं, जीवनोपयोगी बातों का भी बड़ा ही सजीव एवं यथार्थ चित्रण हुआ है। मनोभावों के सूक्ष्म विश्लेषण में भावुकता और मनोवैज्ञानिकता का मणिकाञ्चन संयोग भी दृष्टिगोचर होता है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का चतुर्थ अंक केवल इस नाटक का ही नहीं, अपितु समस्त संस्कृत साहित्य का श्रेष्ठ साहित्यिक रत्न है।